CHAPTER 2, हुसैन की कहानी अपनी ज़बानी

PAGE 35, प्रश्न - अभ्यास

11:1:2:प्रश्न - अभ्यास :1

1. लेखक ने अपने पाँच मित्रो के जो शब्द - चित्र प्रस्तुत किए है ,उनसे उनके अलग - अलग व्यक्तित्व की झलक मिलती है। फिर भी वो घनिष्ठ मित्र हैं कैसे ?

उत्तर : लेखक की मुलाकात अपने पांच मित्रो से बोर्डिंग में एक साथ रहते हुए हुई थी। लेखक के पाँच मित्र जिनके नाम - मोहम्मदइब्राहीमगोहर अली,अरशद, हामिदकंबर हुसैन, अब्बासजीअहमद और अब्बास अली फ़िदा था इन पाँचो का व्यवहार और व्यक्तित्व एक दूसरे से काफी भिन्न था लेकिन

ये सभी आपस में अभिन्न मित्र थे और आजीवन रहे। इनके बिच घनिष्ठता का एक मुख्य कारण था इन सब का हंसमुख और जिंदादिल होना। उन सब के स्वभाव में बिलकुल खुलापन था। उन सब की ये बाते लेखक को इतना भा गयी की अलग व्यक्तित्व होने के बावजूद उनकी आपस में इतनी घनिष्ठा हो गयी और वो आजीवन मित्रता के बंधन में बंध गए और इतना ही नहीं बोर्डिंग के बाद भी इस बंधन से अलग नहीं हो पाए। और जीवनपर्यारत एक दूसरे के साथ रहे।

11:1:2:प्रश्न - अभ्यास :2

2. 'प्रतिभा छुपाये नहीं छुपती ' कथन के आधार पर मकबूल फ़िदा हुसैन के व्यक्तित्व पर प्रकाश

डालिए।

उत्तर : मकबूल फ़िदा हुसैन व्यक्तिव बहुत रचनात्मक रहा है वो प्रतिभा के धनि व्यक्ति है जब वो अपनी दुकान पर बैठते थे तो उनका धयान हमेशा आस पास कि घटनाओ पर केंद्रित रहता था। वो हमेशा आस पास की चीजों की आकृति बनाते रहते थे। उनकी बनायीं हुई आकृति को देख कर उनके पिता उनकी कला के कायल हो गए। सिंहगढ़ फिल्म देखने के बाद उनके जीवन में कला के प्रति बड़ा बदलाव आया। और उनके मन में आयल पेंटिंग के प्रति जूनून भर गया। आयल पेंटिंग करने के लिए उन्होंने अपनी किताबे बेच दी और अपनी पहली आयल पेंटिंग बनाई। अपनी चित्रकला के प्रति जूनून ने मकबूल फ़िदा हुस्सैन को दुनिया का एक नामी

चित्रकार बना दिया।

इस लिए कहा जाता है प्रतिभा छिपाये नहीं छिपती।

11:1:2:प्रश्न - अभ्यास :3

3. 'लेखक जन्मजात कलाकार हैं ' इस आत्मकथा में सबसे पहले यह कहाँ उद्घाटित होता हैं। ?

उत्तर : बोर्डिंग स्कूल में जब लेखक एक दिन अपने चित्र कला की कक्षा में उपस्थित होता है तो चित्रकला के मास्टर जी ब्लैकबोर्ड पर एक चिड़िया का चित्र बनाते हैऔर वहाँ पर उपस्थित सभी विद्यार्थीयो से कहते है की सब लोग अपनी - अपनी स्लेट पर उस चिड़िया का चित्र बनाये। लेकिन सिर्फ लेखक छोड़ कर अतिरिक्त कोई भी उस चित्र को

नहीं बना पाता है। चित्र बनाने के कारण लेखक कि चित्रकला की प्रतिभा उभर कर सामने आती है और लेखक को इसके लिए दस में से दस अंक मिलते हैं।

11:1:2:प्रश्न - अभ्यास :4

4. दुकान पर बैठे - बैठे भी मकबूल के भीतर का कलाकार उसके किन कार्यकलापों से अभिव्यक्त होता है ?

उत्तर : दुकान में बैठने के बाद भी मकबूल का पूरा ध्यान ड्राइंग और पेंटिंग पर था। आस पास की झुंड पर उसकी कड़ी नजर रहती थी । उसी समय, उसने अपने आसपास के जीवन को बीस रेखाचित्रों में उकेरा। दुकान पैर बैठे - बैठे ही वो इधर-उधर से

आने वाले व्यक्तियों और वस्तुओ की रेखाचित्र बनाता था। इसमें वो बैठने वाले लोगों के स्केच बनाता था। घूंघट से ढँकी मेहतारानी, एक पगड़ी और पेंच के साथ एक गेहूं की बोरी लिए हुए मजदूर, दाढ़ी वाला पठान ,और बकरी के बच्चो के साथ-साथ और भी ढेर सारे चित्र बनाए। अपनी पहली "आयल पेंटिंग भी दुकान पर बैठ कर ही बनायीं" फिल्म 'सिंघ्गढ़' से प्रेरित हो कर उसने अपनी किताबे बेच दी और आयल पेंटिंग करना आरम्भ किया। इस फिल्म ने उसके जीवन पर बहुत प्रभाव डाला।

11:1:2:प्रश्न - अभ्यास :5

5. प्रचार प्रसार के पुराने तरीको और वर्तमान

तरीको में क्या फ़र्क आया है ? पाठ के आधार पर बताएँ।

उत्तर : प्रचार के पुराने तरीकों और वर्तमान तरीकों में बहुत अंतर आया है। आज प्रचार प्रसार के साधन सुलभ हो गए हैं जिसके माध्यम से आम लोगो तक पहुंच बहुत सरल हो गई है। इसके अलावा, मनोरंजन के साधनों में भी विकास हुआ है। दूरदर्शन ने इसे बहुत आसान बना दिया है। पुराने समय में प्रचार के लिए फिल्म के पोस्टरो को टांगे पर या ठेले पर लगा कर चारो तरफ घुमा - घुमा कर प्रचार किया जाता था। साथ में बैंड भी बजाया गया था। यह पूरा समूह प्रचार करने के लिए शहर में घूमता रहता था।
फिल्म सिंहगढ़ का प्रचार उसी तरह किया गया था। पतंग बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले रंगीन

कागज पर अभिनेता और अभिनेत्रियों के चित्र छपे होते थे। यह हर घर में वितरित किया गया था। आज टीवी, सिनेमा, समाचार पत्र, इंटरनेट इस तरह का प्रचार होर्डिंग बोर्ड आदि के माध्यम से किया जाता था। आज प्रचार का खर्च थोड़ा अधिक करना पड़ता है लेकिन पूरा काम समय पर होता है। प्रचार प्रसार की पूरी जिम्मेदारी आज कल विज्ञापन कंपनी और कार्यक्रम आयोजक लेते है। इसके लिए अब शहर - शहर और गांव - गांव नहीं जाना पड़ता। हमारे समाज में बढ़ते वैंज्ञानिक विकास और आधुनिकता की देन हैं।

11:1:2:प्रश्न - अभ्यास :6

6. कला के प्रति लोगो का नजरिया पहले कैसा था ? उसमे अब क्या बदलाव आये है ?

उत्तर : आज कल लोगो में कला और कलाकार के प्रति नज़रिया बहुत बदल है लोग अब कला और कलाकारों की बहुत इज्जत करते है तथा उन्हें अब प्रसिद्व व्यक्तियो में शामिल करते हैं। लेकिन पहले ऐसा नहीं था पहले कलाकारों की इतनी कद्र नहीं की जाती थी। पहले उन्हें राजा के यहाँ ,अफसरों के यहाँ ,अमीर लोगों के यहाँ दीवारों की शोभा बढ़ाने के लिए तस्वीर बनाने वाला माना जाता था। उस समय के कलाकार कला को आजीविका के रूप में नहीं सोच सकते थे। लेकिन आज कल कला की प्रसद्धि इतनी बढ़ी है की किसी नामी कलाकार की कृति काफी

ज्यादा पैसो में बिकती है जिससे पैसा और नाम दोनों कमाया जाता है। कोई कोई कृति इतनी महँगी होती है कि आम इंसान इसे नहीं खरीद पाता तो वो उस कृति की प्रतिलिपि ही खरीद कर अपने घर की दीवारों की शोभा बढ़ाता है।

इस प्रकार ये कहना बिल्कुल गलत नहीं है कि आज के समय में कला और कलाकार दोनों के प्रति लोगो का नजरिया बदल चूका हैं

11:1:2:प्रश्न - अभ्यास :7

7. मकबूल के पिता के व्यक्तित्व की तुलना अपने पिता के व्यक्तित्व से कीजिए ?

उत्तर : मेरे पिता और मकबूल के पिता के

व्यक्तित्व की तुलना कुछ यूँ की जा सकती है:

1. पुत्र के प्रति प्यार और समझदारी : मकबूल के पिता को जब लगा कि दादा की मृत्यु के पश्चात उनका बेटा उस शोक से बाहर निकल नहीं पा रहा तो उन्होंने कोई जोर जबर्दस्ती नहीं दिखाई बल्कि उसका दाखिला बोर्डिंग स्कूल में करवा दिया ताकि वहां जाकर उसका मन बदल सके,उसके नए दोस्त बने और उन दोस्तों के साथ रह कर वो धीरे - धीरे अपने दादा जी की यादो से उबर सके। और ऐसा हुआ भी मकबूल अपने दादा जी कि मृत्यु को भूलने लगा।

मकबूल और मेरे पिता में ये समानता है कि मेरे पिता भी मकबूल के पिता की तरह समझदार और मुझसे प्यार करने वाले हैं। उन्होंने मेरे साथ कभी भी सख्ती नहीं कि हैं और हमेशा कोशिश करते हैं कि

मैं सहज रह सकूँ।

2. कला और प्रतिभा के प्रति कद्रदान : मकबूल के पिता ने मकबूल की प्रतिभा को पहचाना और उसकी शाबाशी देते हुए उसका पूरा समर्थन दिया। बेटे की कला देखकर वह काफी प्रसन्न हो गए और बेंद्रे साहब के कहने से ही उसके लिए ऑयल पेंटिंग का सामान मंगवा दिया, इससे यह ज्ञात होता है की वो प्रतिभा और कला के प्रति कद्रदान थे।

अगर देखा जाये तो मेरे पिता भी इस मामले में वैसे ही हैं, संगीत में मेरी रूचि है ये देख मेरा पिता जी ने मुझे संगीत सिखने के लिए प्रेरित किया और मेरा दाखिला संगीत स्कूल में करा दिया। और मुझे जीवन में अपनी दिशा चुनने की स्वतंत्रता दी हुई है।

3. भविष्य के प्रतिअग्रसोची : मकबूल के पिता को पता था की मकबूल एक अच्छा चित्रकार है और उन्होंने इस कला के प्रति मकबूल को हमेशा प्रेरित किया। वो मकबूल के भविष्य को सुनहरा बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने अपने पारिवारिक संबंधों की परवाह नहीं की। और आज मकबूल को चित्रकला जगत के प्रसिद्ध यक्तियो में गिना जाता है।

इससे उनके अग्रसोची होने का पता चलता है।

अबतक मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ लेकिन यदि कभी हुआ तो मेरे पिता की सोच हालाँकि मैंने पिता जी के बारे में सबसे यही सुना है कि वे अग्रसोची हैं।